Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 15, (2020) 73-77 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v15i1.10

BRIEF ANALYSIS OF THE IMPORTANCE OF "LORD SURYA" AS DESCRIBED IN MYTHOLOGICAL LITERATURE

KUSUM DOBRIYAL AND J K GODIYAL

Department of Sanskrit, Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University Campus, Pauri Garhwal – 24001

*Corresponding Author Email: kusumdobriyal62@rediffmail.com

Received: 12.08.2020; Revised: 28.10.2020; Accepted: 5.11.2020
©Society for Himalayan Action Research and Development

Abstract

On the basis of scientific, mythological and Vedic analysis, this statement is true that "Surya Tattva" is the power and utility of this entire world. The Sun illuminates the entire universe with a monolithic light beam, and the Sun rays provide life and power in all things. "Prakash" is used in various meanings in Indian poetry, its most prevalent meaning is "Knowledge", "Conscious", "Noun" and the cognition symptom "Intelligence". A brief discussion has been presented in the research paper presented, studying the scientific and mythological references of the importance and uniqueness of the sun god.

Keywords: Sun, Source of Life, Science, Puranas

पौराणिक साहित्य में वर्णित भगवान सूर्य की महिमा का संक्षिप्त विवेचन

कुसुम डोबरियाल एवं जयकृष्ण गोदियाल
संस्कृत विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, पौड़ी गढ़वाल–246001

साराँश
वैज्ञानिक विवेचना एवं पौराणिक तथा वैदिक आधार पर यह वक्तव्य सुस्पष्ट है कि 'सूर्य तत्व' से ही इस समस्त चराचर जगत की सत्ता एवं उपियोगिता है। सूर्य अखंड प्रकाश पुञ्ज से समस्त ब्रह्माण्ड को आलोकित करते हैं तथा सूर्य किरणें सभी पदार्थों में रस तथा शक्ति प्रदान करती हैं। भारतीय वाङ्गमय में 'प्रकाश' विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है, इसका सर्वाधिक प्रचलित अर्थ है ज्ञान, चौतन्य, संज्ञा एवं बोध लक्षणा बुद्धि। प्रस्तुत शोध पत्र में भगवान सूर्य की महत्ता एवं विशिष्टता के वैज्ञानिक एवं पौराणिक सन्दर्भों का अध्ययन करते हुए एक संक्षिप्त विवेचना प्रस्तुत की गयी है ।

कुंजी शब्द : सूर्य, जीवन श्रोत , विज्ञान, पुराण
वेद भगवान का उद्घोष है कि 'सूर्य आत्मा जगत–स्तस्थुषश्च'। अर्थात सूर्य न केवल मनुष्य , पशु– पक्षी , कीट पतंग आदि जङ्गम जीवों के ही प्राणात्मा हैं , अपितु वे वृक्ष , लता , औषधि आदि अचल –अन्तःसंज्ञ जीवधारियों के भी प्राणात्मा हैं। जीवन के लिए जिस ऑक्सीजन तत्व की अनिवार्य आवश्यकता है, वह तत्व सूर्य भगवान ही निरंतर ब्रह्माण्ड को प्रदान करते रहते हैं। वर्तमान वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में भगवान् सूर्य को पृथ्वी पर जीवन दाता के रूप में जाना जाता है। सूर्य ही धरती पर

Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 15, (2020) 73-77 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v15i1.10

ऊर्जा का स्रोत है, क्योंकि इसी ऊर्जा को पेड़ –पौधे तथा वनस्पति ग्रहण करने की क्षमता रखते हैं, तथा प्रकाश संश्लेषण के बाद अपना भोजन बनाते हैं। सम्पूर्ण जंतु जगत, जिसमे मनुष्य भी सम्मिलित है, इन्ही पौधों के बनाये गए भोजन को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में ग्रहण करता है। अतः यही परम सत्य है कि सूर्य धरती पर जीवन दाता है, अथवा जीवन का स्रोत है । यही प्रासंगिक है कि सूर्य 'भगवान्' या 'परमात्मा' कहलाने का अधिकारी है।

धरती पर प्राचीनतम साहित्य वेद एवं पुराणों में सूर्य को भगवान् के रूप में वर्णित किया गया है। वेदों में सूर्य से सम्बंधित अनेक सूक्त वर्णित हैं जो सूर्य के महत्ता को विशद रूप में व्याख्यायित करते हैं।[1] इसी क्रम में सर्व प्रथम ब्रह्म पुराण वर्णनीय है जिसमे भगवान सूर्य की महिमा, सूर्य देव की स्तुति तथा उनके अष्टोतर शतनामों का वर्णन है। कहा गया है कि जो व्यक्ति अपनी इन्द्रियों को वश में रखते हुए सदा संयम पूर्वक भक्ति भाव और विशुद्ध चित्त से भगवन सूर्य को अर्घ्य देते हैं वे मनोवांछित भोगों का उपभोग करके परमगति को प्राप्त होते हैं–

ये वार्घ्यम संप्रयच्छन्ति सूर्याय नियतेन्द्रियाः ।
ब्रह्मणाः क्षत्रियः वैश्यः स्त्रियः शुदृश्चः ।।
भक्ति भावेन सततं विशुद्धेनान्तरात्मना ।
ते भुक्त्वाभिमतान कामान प्राप्नुवन्ति परमगतिम[2] ।।

ब्रह्म पुराण में सूर्य के बारह रूप और 108 नामों का वर्णन मिलता है[3] । बारह रूपों में 'इंद्र' देवताओं के राजा हैं, 'धाता' प्रजापति हैं, 'पर्जन्य' जल बरसाते हैं, 'त्वष्टा' वनस्पतियों और ओषधियों में विराजमान हैं , 'पूषा' अन्न में स्थित हैं , 'अर्यमा' वायु के माध्यम से सभी देवताओं में स्थित हैं, 'भग' देवधारियों के शरीर में स्थित है , 'विवस्वान' अग्नि में स्थित हैं और जीवों के खाये हुए भोजन को पचते हैं , 'विष्णु' धर्म की स्थापना के लिए अवतार लेते हैं, 'अंशुमान' वायु में प्रतिष्ठित होकर आनंद प्रदान करते हैं, 'वरुण' जल में स्थित होकर प्रजा की रक्षा करते हैं तथा 'मित्र' सम्पूर्ण लोक के मित्र हैं। सूर्य का उपर्युक्त वैशिष्ट्य उन्हें अतिशय लोकपूज्य बना देता है[4]।
ब्रह्म पुराण में ही सूर्य के 108 नामों का वर्णन प्रस्तुत श्लोकों में स्पष्ट होता है:

ॐ सूर्योर्यमा भग्वस्त्वष्ठा पूषारकः सविता रविः ।
गभस्तिमानजः कालो मृत्युर्धाता प्रभाकरः ।।
पृथ्व्यापश्च तेजश्च रवं वायुश्च परायणं ।
सोमो वृहस्पतिरू शुक्रो बुधो अङ्गारक एव च ।।
इन्द्रो विवस्वान दीप्तांशुः शुचिः सौरिः शनैश्चरः ।
ब्रह्मा, विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वैश्रवणौ यमः।।

पद्म पुराण में भी सूर्य की महिमा, सूर्य की उपासना तथा दान माहात्म्य आदि के फल वर्णन प्रचुर मात्रा में मिलते हैं पद्म पुराण के आठवें अध्याय में सूर्य वंश इस प्रकार वर्णित है[5]:

छायायांजनयामाससंगेयमितिभाष्करः ।
छायास्वपुत्रेत्वधिकम स्नेहचक्रमनौतदा ।।

पद्म पुराण में ही सूर्य के माहात्म्य का वर्णन करते हुए कहा गया है कि ब्रह्मा ने जब भगवान सूर्य की स्तुति की तो सूर्य ने उनसे वर मांगने को कहा। ब्रह्मा ने सर्व प्रथम भगवान सूर्य से अपनी किरणों को कोमल करने को कहा । आदित्य ने कहा कि मेरी कोटि कोटि किरणे संसार का नाश करने वाली हैं अतः इनका छेदन कर दीजिये । इस पर ब्रह्मा ने विश्वकर्मा को बुलाकर वज्रमय चक्र से सूर्य की किरणों का छेदन करवाकर उनसे विष्णु चक्रम, यमदण्ड, त्रिशूल, कालखंड शक्ति और चंडिका आदि परम अस्त्र बनाये[6]।
पद्म पुराण के ही एक अन्य प्रसंग में वर्णित है कि सूर्य के बारह नामों के स्मरण मात्र से ही सम्पूर्ण रोगों का नाश हो जाता है[7]।

सुवर्णरेता मित्रश्च पूषा त्वष्टा च ते दशरू ।

Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 15, (2020) 73-77 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v15i1.10

स्वयंभूस्तिमिराशश्च द्वादशः परीकीर्तितः ।।
नामान्येतानी सुर्यश्य शुचिर्यस्तु पठेन्नरः ।
सर्वपापांश्च रोगांश्च मुक्तो याति परंगतिम ।।

श्री विष्णु पुराण में सूर्य सम्बन्धी खगोलीय वर्णन विशेष दृष्टव्य हैं। वर्णन है कि सूर्य के रथ का विस्तार नौ हजार योजन है तथा इसका ईशा दंड इससे दोगुना है। उसका धुरा डेढ़ करोड़ सात लाख योजन लम्बा है। सात छंद (गायत्री , बृहती , उष्णिक , जगती, त्रिष्टुप, अनुष्टुप और पंक्ति) उसके घोड़े हैं। सूर्य के रथ का दूसरा धुरा साढ़े पैंतालीस हजार योजन लम्बा है । इसी पुराण में वर्णन है कि जगत की स्तिथि और पालन के लिए वे ऋक, यजुः और सामरूप विष्णु सूर्य के भीतर निवास करते हैं । प्रत्येक मास में जो सूर्य होते हैं उन्ही में वह वेदत्रयीरूपिणी विष्णु की पराशक्ति निवास करती है । पूर्वाह्न में ऋक , मध्यान में यजुः ततः सांयकाल में वृहदयंत्रादि समस्त स्तुतियां सूर्य की स्तुति करती हैं[8]।

ऋचः स्तुवन्ति पूर्वान्हे मध्यान्हे यजूषि वै ।
वृहद्रयंतरदिनी सामान्यहं क्षये रविम, ।।

श्रीमद्भागवत में वर्णन है कि भगवान सूर्य का कर्मफलदायक तेज प्रकृति से परे है। उसी ने स्वसंकल्प द्वारा इस जगत की उत्पत्ति की है । फिर वही अंतर्यामी रूप से इसमें प्रविष्ट होकर अपनी चित्त शक्ति के द्वारा विषयलोलुप जीवों की रक्षा करता है । हम उसी प्रवर्तक तेज की शरण लेते हैं[9]।

परोरजः सवितुरजातवेदो देवश्य भर्गो मनसेदम जजान ।
सुरेतसादः पुरविश्य चष्टे हंसं गृह्राणम नृषङिंगिरामिमाः।।

मार्कण्डेय पुराण में मार्तण्ड सूर्य की उत्पत्ति का तथा उसकी संज्ञा और छाया दोनों पत्नियों तथा ६ संतानों का विस्तार से वर्णन आया है । अंत में कहा गया है कि जो सूर्य सम्बन्धी देवों के जन्म को तथा सूर्य के माहात्म्य को सुनता व पढता है , वह आपत्ति से छंट जाता है और महान यज्ञ को प्राप्त करता है[10]।

विवस्वतस्तु जातानाम शृणुयाद वा पठेत तथा ।
आपदम प्राप्य म्युच्येत पाप्नवाच्च महद्यशः ।।
अहोरात्रकृतं वापमेतच्छमयतिश्रुतम ।
माहात्म्यमादिदेवस्य मार्तण्डस्य महात्मनः।।

लिंग पुराण के बाइसवें अध्याय में सूर्य की उपासना का विस्तृत वर्णन मिलता है[11]। पौराणिक मत है कि लिंग पुराण में बताई गयी विधि से जो व्यक्ति सूर्योपासना करता है उसे मनोकामना की पूर्ति होती है।

स्नानयागादिकर्माणी कृत्वा वै भास्करस्य च ।
शिवस्नानं ततः कुर्याद भस्मस्नानम शिवार्चनं ।।

लिंग पुराण में सूर्य के वाष्कल मन्त्रों का वर्णन प्रमुखतया मिलता है जिसे सब देवों में सार्वभूत मानागया है। ये मन्त्र हैं रू ॐ भूः , ॐ भुवः , ॐ स्वः , ॐ महः , ॐ जनः , ॐ तपः , ॐ सत्यं , ॐ ऋतुम , एवं ॐ ब्रह्म ।

नवाक्षरमयम मंत्रम वाष्कलम परिकीर्तितं ।।
न क्षरतीति लोकानि ऋतमक्षरमुच्यते ।
सत्यमक्षरमित्युक्तं प्रणवादिनमोन्तकम।।

Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 15, (2020) 73-77 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v15i1.10

लिंग पुराणानुसार ताम्र पात्र को गंध, जल, लाल चन्दन , रक्त पुष्प, तिल , कुश , अक्षत, दूर्वा ,आपामार्ग , पंचगव्य तथा गोघृत से पूर्ण करके नवाक्षर मन्त्र से पूर्वमुखी होकर सूर्य को अर्घ्य देने से दस हजार अश्व मेघ यज्ञों के सम्यन फल प्राप्ति का योग बताया गया है।

अग्नि पुराण के विभिन्न अध्यायों (19, 51, 73, 99) में भी सूर्यादि ग्रहों, सूर्य देव की पूजा – स्थापना अदि विधियों का वर्णन प्राप्त होता है ।

पद्मकारो करोकृत्वा प्रतिश्लिष्टे तु मध्यमे ।
अङ्गुल्यो धारयेनतस्मिं विंबमुद्रति सोच्यते[12]।।

बराह पुराण में वर्णन है कि श्रीकृष्ण भगवान का पुत्र साम्ब अत्यंत सुन्दर था जो किसी कारणवश कोढ़ी होने हेतु श्रापित हो गया था। इस पर नारद जी की सलाह पर सूर्योपासना करने से वे श्राप मुक्त हो गए थे

ततस्तु नरदेनैव सांबपापविनाशकः ।
आदिश्टो हि महँ धर्म आदित्यराधानम प्रति ।।
साम्ब साम्ब महाबाहो शृणु जाम्ब्वतीसुत ।
पूर्वांचले च पूर्वाह्ने उद्यन्तं तु विभावसुम[13]।।

मत्स्य पुराण में भगवान सूर्य की गति, अवस्थिति, और ज्योतिषपुंजों के साथ सम्बन्ध आदि का वर्णन मिलता है। वर्णित है कि सूर्य अपनी तेजमयी किरणों से जल को ग्रहण करते है । वे ही किरणे वायु के संयोग द्वारा समुद्र से भी जल को खींचती हैं तदन्तर सूर्य ग्रीष्म ऋतू के प्रभाव से समय समय पर परिवर्तन कर जल को अपनी श्वेत किरणों द्वारा मेघों को देते हैं । वायु द्वारा प्रचलित होने पर उन्ही मेघों की जलराशि बाद में पृथ्वी तल पर गिरती हैं और तदनन्तर 6 महीनों तक संतुष्टि एवं अभिवृद्धि के लिए सूर्य पृथ्वी तल पर वृष्टि करते हैं[14]।

पुराणों के अतिरिक्त विभिन्न प्राचीन साहित्यों में भी भगवन सूर्य की महिमा वर्णित की गयी है। वैदिक साहित्य में सूर्य के माहात्म्य का विस्तृत वर्णन करते हुए विश्लेषकों द्वारा यह प्रतिपादित है कि वेदों ने सूर्य को जड़ जंगम की आत्मा माना है (सूर्यात्मा जगतस्तस्युषश्च[15])। ज्योतिष में सूर्य को आत्मा का कारक माना गया है। इसके अनुसार सूर्य से संदर्भित नक्षत्र कृतिका, उत्तरषाढ़ा और उत्तराफाल्गुनी हैं। सूर्य का अयन 6 माह का होता है। 6 माह यह दक्षिणायन यानि भूमध्य रेखा के दक्षिण में मकर वृत्त पर रहता है और 6 माह यह भूमध्य रेखा के उत्तर में कर्क वृत्त पर रहता है। इस तरह बिभिन्न सांस्कृतिक विषयों को ज्योतिष में सूर्य के साथ जोड़ा गया है। अंक शास्त्र में भी सूर्य को केंद्र की मान्यता प्रदान करते हुए प्रथम अंक (1) का स्थान दिया गया है[16]। इस अंक में जन्मे जातक सूर्य प्रधान होकर तेजस्वी, यशस्वी , ईमानदार और स्वाभिमानी होते हैं।

मिश्र की संस्कृति में 'रॉ' को सूर्य का देवता माना गया है। इरॉकीज और प्लेन्स जैसी मूल अमेरिकी संस्कृतियों में सूर्य को जीवन शक्ति के रूप में मान्यता दी गयी है । फारसी समाज में मिथ्रा पंथ की मान्यता है जिसमे सूर्य को सम्मानित करना उनके अनुष्ठा का अभिन्न अंग होता है[17]। बेबीलोन के ग्रंथों और कई एशियाई धार्मिक पंथों में भी सूर्य पूजा का वर्णन मिलता है।

निष्कर्षतः इस विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सूर्य वैज्ञानिक के आधार पर ही नहीं बल्कि समस्त प्राचीन संस्कृतियों की मान्यतानुसार पृथ्वी तथा इस पर रहने वाले समस्त जीवधारियों के लिए जीवन का प्रमुख स्रोत है। इसी के कारण प्रकृति संरक्षित है । मानव, धरती पर जीवन श्रृंखला के उच्चतम स्तर पर विराजित होने के कारण, जिम्मेदार है कि वह मर्यादित जीवन जीते हुए सूर्य और पृथ्वी के संतुलन को बनाये रखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करे।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. सूर्यसूक्त, चतर्वेदसूक्तसंग्रह
2. ब्रह्म पुराण 28/37–38
3. ब्रह्म पुराण अ०/29–30
4. राम जी उपाध्याय (1979) , भारतीय संस्कृति में सूर्य , कल्यणांक 53/1
5. पद्म पुराण सृष्टि खंड 8/45
6. पद्म पुराण सृष्टि खंड 79/657
7. पद्म पुराण सृष्टि खंड 80/666/35–36
8. विष्णु पुराण 2/11/10
9. रतन लाल जी गुप्त, श्रीमद्भागवत के हिरण्यम पुरुष , कल्याण अंक वर्ष 53 अंक 1 पृष्ठ 169
10. मार्कण्डेय पुराण
11. लिंग पुराण, अध्याय –22
12. अग्नि पुराण, अध्याय, 73
13. बराह पुराण, अ० 177/32–34
14. मत्स्य पुराण में सूर्य सन्दर्भ/कल्याणांक 53/1, पृ० –192–200
15. कुसुम डोबरियाल एवं जे के गोदियाल (2011) वैदिक साहित्य में वर्णित भगवाम सूर्य का माहात्म्य, वेदों में विज्ञानं, संपादन, डॉक्टर देवराज खन्ना एवं साथी य दया पब्लिशिंग हाउस , नई दिल्ली, पृ० 158–162
16. सुरेंद्र कुमार पांडेय (2009), सूर्य विमर्श , हिंदुस्तान अकेडमी , 15 जुलाई, 2018
17. www-brittanica.com/topic/mithra